गज़ल

डॉ. राकेश जोशी

हर नदी के पास वाला घर तुम्हारा
आसमां में जो भी तारा हर तुम्हारा

बाढ़ आई तो हमारे घर बहे बस
बन गई बिजली तो जगमग घर तुम्हारा

तुम अभी भी आँकड़ों को गढ़ रहे हो
देश भूखा सो गया है पर तुम्हारा

फिर तुम्हें कोई मदारी क्यों कहेगा
छोड़कर जाएगा जब बंदर तुम्हारा

ये ज़मीं इक दिन उसी के नाम पर थी
वो जिसे कहते हो तुम नौकर तुम्हारा

दूर उस फुटपाथ पर जो सो रहा है
उसके कदमों में झुकेगा सर तुम्हारा

अगर जंगल में रहना है तो डर क्या है
तेरा है हाथ सर पर तो फ़िकर क्या है

सफ़र क्या है, नदी से पूछकर आना
समंदर क्या बताएगा सफ़र क्या है

अँधेरे में बता मत तू कि है जगमग
उजाले में बता तेरा शहर क्या है

ख़बर वो है जो तुझको ख़ूब चौंका दे
अगर तुझको ख़बर है तो ख़बर क्या है

किसी फुटपाथ पर सोई ग़रीबी से
किसी मज़दूर से पूछो कि घर क्या है

ये बादल तो है अनपढ़ क्या बताएगा
फ़सल ही अब बताएगी ज़हर क्या है

सर छुपाने के लिए छप्पर नहीं था
लोग कहते हैं कि उसका घर नहीं था

इन ग़रीबों के लिए केवल सड़क थी
दौड़ पड़ने का कोई अवसर नहीं था

जो बनाने के लिए भटका बहुत वो
घर वहीं था, बस वही घर पर नहीं था

हम ही उसके गांव में रहने लगे थे
सच, हमारे गांव में बंदर नहीं था

पांव थे जो चल रहे थे बेवज़ह ही
मैं सफ़र में था, मगर अक्सर नहीं था

आज सब कुछ है मगर है नींद ग़ायब
वो भी दिन थे, नींद थी, बिस्तर नहीं था

फ़्लैट में रहकर अकेले थे बहुत हम
सर पे छत तो थी मगर अंबर नहीं था

गालियां तो हमने थीं जी-भर के दे दीं
हाथ में बस, आपका कॉलर नहीं था

तोड़ देते सभ्यता के कांच सारे
क्या करें पर, हाथ में पत्थर नहीं था

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोईवाला,देहरादून

ISSN:2583-8849